विश्व रंग में विज्ञान

विश्व रंग 2024 मॉरीशस में इस बार 'हिन्दी में विज्ञान संचार एवं लेखन : चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ' विषय पर विमर्श सत्र आयोजित हुआ। इस सत्र में वरिष्ठ विज्ञान लेखक देवेन्द्र मेवाड़ी, डॉ. कृष्ण कुमार मिश्र, डॉ. मनीष मोहन गोरे और मोहन सगोरिया ने भाग लिया। देवेन्द्र मेवाड़ी ने विज्ञान संचार एवं लेखन के इतिहास की विहंगम प्रस्तुति की। उन्होंने 18वीं शताब्दी से अब तक के हुए विज्ञान संचार एवं लेखन को विस्तार से सभा में प्रस्तुत किया। अपने आलेख में उन्होंने उन विज्ञान संचारकों को भी याद किया जिन्होंने छोटी-छोटी भूमिकाओं के जरिये विज्ञान को आमजन तक पहुँचाया। डॉ. कृष्ण कुमार मिश्र ने विज्ञान संचारकों के साथ ही सरकार द्वारा किये जा रहे प्रयासों के आँकड़े प्रस्तुत किये। उन्होंने प्रमाणित किया कि विज्ञान की बात जन-जन तक पहुँच रही है और वे जागरुक भी हो रहे हैं। आमजन में विज्ञान को लेकर जो जागरुकता आई है उससे उसकी जीवन शैली में बदलाव और विकास हुआ है। डॉ. मनीष मोहन गोरे ने विज्ञान चुनौतियों पर अपनी बात की और देश भर की संस्थाओं को परिदृश्य में रख कर उनके कार्यों को उजागर किया। मोहन सगोरिया ने विज्ञानिक संस्थाओं के साथ-साथ विज्ञान संचार केंद्र डॉ. सी.वी. रामन विश्वविद्यालय, आईसेक्ट और 'इलेक्ट्रॉनिकी आपके लिए' के प्रयासों को प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर इलेक्ट्रॉनिकी आपके लिए के नये अंक का विमोचन हुआ। साथ ही विनय उपाध्याय द्वारा संपादित विश्व रंग पुस्तिका का लोकार्पण किया गया जिसमें विश्व रंग के विभिन्न पक्षों पर आलेख संकलित हैं